ब्राह्मणों की सम्पन्नता और सम्पूर्णता ही प्रत्यक्षता का आधार है

आज अमृतवेले बाबा को सन्देश देकर आई थी कि हम सबकी दिल है कि आज आप वतन में मम्मा को बुलायें और मम्मा से मुलाकात करायें। सभी मम्मा को बहुत याद करते हैं। तो बाबा मुस्कराये और कहा कि मुरब्बी बच्चे बाप की आज्ञा को 'जी हजूर' करते हैं तो बाप भी मुरब्बी बच्चों की आश वा आज्ञा को पूर्ण करने के लिए 'जी हजूर' करते हैं।

तो अभी जब हम आप सबका यादप्यार लेकर वतन में पहुँची तो देखा कि बाबा मम्मा, दीदी, भाऊ, पुष्प शान्ता दादी आदि... बहुत-सी दादियों से बाबा कोई गहरी रूहरिहान कर रहे हैं। सभी के चेहरे स्पष्ट नहीं दिखाई दे रहे थे। मैं खड़े होकर देख रही थी, परन्तु समझ में नहीं आ रहा था। फिर वह सीन गायब हो गया, मम्मा-बाबा रह गये। मैंने कहा बाबा, आपने सभी को कहाँ मर्ज कर दिया, तो बाबा बोले आप तो आज मम्मा से मिलने आई हो ना! तो मैं मम्मा को देखने लगी, मम्मा कभी मुझे देखे और कभी बाबा को देखे। हमने पूछा बाबा आज आप इन्हों से क्या रूह-रूहान कर रहे थे? तो बाबा मुस्कराये और कहा कि यह जो एडवांस पार्टी में बच्चे गये हैं, उनकी मीटिंग हो रही थी। मैंने कहा कि बाबा यह सब क्या कह रहे थे! अभी तो यह पर्दा उठना चाहिए कि आखिर भी यह सब कहाँ हैं, क्या कर रहे हैं! तो बाबा ने कहा मम्मा से पूछो। तो मैंने मम्मा को कहा – मम्मा, बताओ ना, आप सब कब प्रत्यक्ष होंगे? आपके साथी सब कहाँ हैं! तो मम्मा मुस्कराती रही। फिर मैंने बाबा से पूछा, बाबा आखिर पर्दा कब खुलेगा? तो बाबा ने मुझसे पूछा कि आपकी सम्पूर्णता का पर्दा कब खुलेगा? आप सब सम्पूर्णता के समीप पहुँचे हो? सेवा का कार्य पूरा हो गया है? तो मैं चुप हो गई। फिर बाबा ने कहा – बच्ची, बाबा तो बार-बार बच्चों को इशारा देता रहता है कि सारा मदार बच्चों के पुरुषार्थ पर है। जितना जल्दी बच्चे सम्पन्न सम्पूर्ण बनेंगे उतना जल्दी यह पार्ट खुलेगा। मैंने कहा – बाबा, आप कुछ ऐसा पुरुषार्थ कराओ ना जो सब जल्दी सम्पन्न बन जाएँ। तो बाबा ने कहा कि बाबा तो बच्चों को इशारा देता रहता है, स्नेह, सहयोग और शक्ति भी देता है लेकिन बनना

और आगे बढ़ना तो बच्चों को है। बच्चे जब तीव्र पुरुषार्थ करते हैं तो प्रकृति भी अपना खेल दिखाती है। फिर बच्चों का पुरुषार्थ ठण्डा होता है तो वह भी ठण्डी हो जाती है। इसलिए आलराउण्ड सभी का संगठित रूप में पुरुषार्थ चाहिए। प्रकृति तो आपके ऑर्डर का इन्तजार कर रही है, आप सम्पन्न बनकर आर्डर करो तो वह अपना कार्य आरम्भ करे। बाबा तो प्रकृति के, माया के बंधन से ऊपर बैठा है। आप बच्चों को प्रकृति जीत, मायाजीत बनना है। तो आप जब ऐसा बन प्रकृति को इशारा करेंगे तो प्रकृति अपना कार्य शुरू करेगी और माया विदाई लेगी। अभी बच्चों में थोड़ा अलबेलापन आ जाता है। सोचते हैं कि समय आयेगा तो बन जायेंगे। तो बाबा को बच्चों पर बहुत रहम आता है कि बच्चे जल्दी-जल्दी क्यों नहीं तैयार होते हैं।

फिर बाबा ने कहा कि बच्ची, अपनी मम्मा को देखो, बाप के मुख से जो निकला इस बच्ची ने फौरन धारण किया। कथनी-करनी समान होने के कारण देखो जगदम्बा बन गई। तो एक ने इतना पुरुषार्थ थोड़े समय में किया जो उसका पार्ट स्पष्ट हो गया। इस बच्ची ने बाबा को पूरा-पूरा फालो किया तब आप देखते हो कि सारा साल भक्ति में इनका पूजन, गायन, सिमरण होता रहता है। तो सब बच्चों में नम्बरवन यह जगदम्बा सरस्वती निकली। ऐसे अभी बाबा चाहते हैं कि और जो देवियाँ हैं, जिनका इतना पूजन, आह्वान हो रहा है उनको अब प्रत्यक्ष होना चाहिए। जितना बच्चे प्रत्यक्ष होंगे उतना दुनिया परिवर्तन की ओर जायेगी। स्व-परिवर्तन से ही विश्व-परिवर्तन का कार्य होना है। इसलिए स्व-परिवर्तन ज़रूरी है।

इसके बाद बाबा वहाँ से गायब हो गया। फिर मैंने मम्मा को अकेले सामने देखा तो कहा कि मम्मा आपको सब बहुत याद करते हैं। मम्मा आज दादी ने बहुत-बहुत प्यार से आपके लिए ३६ प्रकार का भोग बनवाया है। दादी आपको बहुत याद करती है। तो मम्मा बोली कि बाबा ने ऐसी आत्मा को निमित्त बनाया है जो सदा उमंग-हुल्लास में रहती है और दूसरों को भी लाती है। ऐसी श्रेष्ठ आत्मा को भी आप फ़ालो करो तो आप क्या से क्या बन जाओ।

फिर मम्मा ने कहा कि देखो आने वाला समय बहुत नाज़ुक है। नाजुक समय के लिए बच्चों को तैयार रहना है। इसके लिए मम्मा सभी बच्चों को तीन शक्तियों की

तीन सौगातें देती है जो हर एक सदा साथ रखना –

१- समेटने की शक्ति धारण करना। अन्दर, बाहर का सब समेटते चलो। २- सहन करने की शक्ति धारण करना। क्योंकि कई बातें सामने आयेंगी, बीमारियाँ आयेंगी, हर बात में आपको सहन करना है। सहन करने से शक्ति आयेगी। और ३- आपके आगे बहुत सी ऐसी परिस्थितियाँ आयेंगी जिनका आपको सामना करना पड़ेगा। इसलिए सामना करने की शक्ति धारण करना।

जितना समेटने की शक्ति आयेगी उतना नष्टोमोहा बनेंगे। एक में ही बुद्धि जायेगी। जितना सहन करेंगे उतना हल्के बनेंगे। चमक बढ़ेगी। और जितना सामना करेंगे उतना ही शक्ति आयेगी।

यह तीन बातें अगर आपने जीवन में धारण कर ली तो बाबा जो चाहता है वह सहज कर सकेंगे। इसलिए मम्मा आज आप सबको याद के रिटर्न में यह ३ सौगात देती है। यह सौगात सदा साथ रखेंगे तो अनुभव करेंगे कि जो बाबा मम्मा चाहते हैं वह सहज कर सकते हैं। सिर्फ थोड़ा सा अटेन्शन देने की बात है।

फिर मम्मा को हमने यहाँ की सेवाओं के बारे में सुनाया कि सेवाओं का कितना विस्तार होता जा रहा है। तो मम्मा बोली आपके पास जो कुछ होता है वह बाबा हमें दिखाता भी है, बताता भी है। इतने में बाबा पहुँच गये। फिर मैंने कहा बाबा आज मम्मा के लिए दादी ने इतना भोग भेजा है। तो बाबा ने कहा – बच्ची में (दादी में) उमंग-उत्साह बहुत है। जो सबको उमंग-उत्साह दिलाती रहती है। ऐसे मेरी मुरब्बी बच्ची को याद देना और कहना कि बच्ची सदा बाप के साथ कम्बाइण्ड है। ऐसे कहते दादी को और सभी को बहुत-बहुत याद दी। फिर बाबा ने अपने हाथ से मम्मा को भोग खिलाया। ऐसे लगता था जैसे किसी देवी को भोग लगाते हैं, मम्मा गिट्टी खाती बाबा को देखती जैसे स्नेह में समाई हुई थी। ऐसे दृश्य देखते याद प्यार देते और लेते हुए मैं साकार वतन में पहुँच गई। ओम् शान्ति।